शीया संप्रदायों के बारे में विवरण

التفصيل في فرق الشيعة

< باللغة الهندية >

अब्दुल अज़ीज़ बिन अब्दुल्लाह बिन बाज़ रहिमहुल्लाह

عبد العزيز بن عبد الله بن باز رحمه الله

अनुवाद : अताउर्रहमान ज़ियाउल्लाह

ترجمة: عطاء الرحمن ضياء الله

शीया संप्रदायों के बारे में विवरण

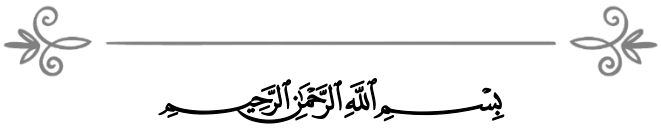

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

मैं अति मेहरबान और दयालु अल्लाह के नाम से आरम्भ करता हूँ।

إن الحمد لله نحمده ونستعينه ونستغفره، ونعوذ بالله من شرور أنفسنا، وسيئات أعمالنا، من يهده الله فلا مضل له، ومن يضلل فلا هادي له، وبعد:

हर प्रकार की हम्द व सना (प्रशंसा और गुणगान) केवल अल्लाह के लिए योग्य है, हम उसी की प्रशंसा करते हैं, उसी से मदद मांगते और उसी से क्षमा याचना करते हैं, तथा हम अपने नफ्स की बुराई और अपने बुरे कामों से अल्लाह की पनाह में आते हैं, जिसे अल्लाह हिदायत प्रदान कर दे उसे कोई पथभ्रष्ट (गुमराह) करनेवाला नहीं, और जिसे गुमराह कर दे उसे कोई हिदायत देनेवाला नहीं। हम्द व सना के बाद :

शीया संप्रदायों के बारे में विवरण

प्रश्नः

आदरणीय शैख, हमें शीया लोगों के साथ मतभेद के कारणों को जानने की सख्त ज़रूरत है। हम आप से उनके अक़ाइद (विश्वास) को स्पष्ट करने की आशा करते हैं। अल्लाह सबके अंतर्दृष्टि को प्रकाशमान करे।

उत्तरः

शीया के बहुत से संप्रदाय (वर्ग) हैं, और उनके बारे में बात करने के लिए थोड़ा समय काफी नहीं है।

संक्षेप के साथ, उनमें से कोई काफिर है जो अली (रज़ियल्लाहु अन्हु) की पूजा करता है, और ''या अली'' (हे अली!) कहता है, तथा फातिमा और हसन वगैरह की पूजा करता है।

उनमें से कुछ लोगों का कहना है कि : जिब्रील अलैहिस्सलाम ने अमानत में विश्वासघात किया है और यह कि ईश्दूतत्व अली के पास है, मुहम्मद के पास नहीं है।

तथा उनमें कुछ दूसरे लोग हैं, उन्हीं में से इमामिया – और वही इस्ना अशरी राफिज़ा हैं – अली रज़ियल्लाहु अन्हु की पूजा करनेवाले हैं। और वे कहते हैं कि : उनके इमाम लोग फरिश्तों और ईश्दूतों से अच्छे हैं।

तथा उनमें बहुत तरह के लोग हैं, जिनमें कुछ काफिर हैं और कुछ काफिर नहीं हैं। उनमें सबसे सरल और सबसे आसान वे लोग हैं जो कहते हैं कि अली रज़ियल्लाहु अन्हु तीनों खलीफा (अबू बक्र, उमर और उसमान रज़ियल्लाहु अन्हुम) से बेहतर हैं। यह कहने वाला व्यक्ति काफिर नहीं है, लेकिन वह गलती पर है। क्योंकि अली रज़ियल्लाहु अन्हु चौथे खलीफा हैं। और सिद्दीक़, उमर, तथा उसमान – रज़ियल्लाहु अन्हुम – उनसे बेहतर हैं। यदि उसने उन्हें इन तीनों पर प्राथमिकता दे दी तो उसने गलत किया और सहाबा के सर्वसम्मत का विरोध किया, परंतु वह काफिर नहीं होगा। उन लोगों के कई वर्ग और प्रकार हैं, जो आदमी इसे जानना चाहता है वह इस बारे में विद्वानों की बातों को देखे, जैसे मुहिब्बुददीन अल–खतीब की किताब ''अल–खुतूत अल–अरीज़ा'', और शैखुल इस्लाम इब्ने तैमिय्य की किताब ''मिनहाजुस्सुन्ना'', तथा इस बारे में लिखी गई अन्य किताबें जैसे एहसान इलाही

ज़हीर की किताब ''अश–शीया वस–सुन्नह'', इसके अलावा इस अध्याय में अन्य बहुत सी किताबें हैं, जो अनेक प्रकार की हैं और जिन्हों ने उनकी त्रुटियों और बुराई को स्पष्ट किया है। अल्लाह से दुआ है कि वह हमें इससे सुरक्षित रखे।

उनमें सबसे दुष्ट इमामिया इस्ना अशरिया और नुसैरिया हैं। उन्हें राफिज़ा कहा जाता है, क्योंकि उन्हों ने ज़ैद बिन अली को उस समय नकार दिया, उनका विरोध किया और उन्हें छोड़ दिया जब उन्हों ने अबू बक्र और उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से बरी होने (अलगाव का प्रदर्शन करने) से इनकार कर दिया था। अतः जो भी इस्लाम का दावा करे उसका यह दावा स्वीकार नहीं कर लिया जायेगा कि वह मुसलमान हो गया। जो आदमी इस्लाम का दावा करता है, उसके दावा को देखा जायेगा। सो जिस आदमी ने केवल अल्लाह की उपासना की, उसके पैगंबर की पुष्टि की, और उस चीज़ का अनुसरणा किया जो पैंगंबर लेकर आए हैं, तो वही वास्तव में मुसलमान है। परंतु जो व्यक्ति इस्लाम का दावा करे जबकि वह फातिमा की पूजा करता हो, बदवी को पूजता हो और ईदरूस वगैरह की पूजा करता हो, तो वह मुसलमान नहीं है। हम अल्लाह तआला से सुरक्षा और बचाव का प्रश्न करते हैं। इसी तरह जो व्यक्ति दीन को गाली दे या नमाज़ छोड़ दे, तो अगरचे वह यह कहे कि वह मुसलमान है, वह मुसलमान नहीं हो सकता। या वह दीन का उपहास करे (मज़ाक़ उड़ाए), या नमाज़ या ज़कात या रोज़ा या मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का उपहास करे या आप को झुठलाए, या यह कहे कि : वह जाहिल हैं, या कहे कि : उन्हों ने अल्लाह के संदेश को पूरा नहीं किया और स्पष्ट रूप से उसका प्रसार नहीं किया, तो ये सब के सब काफिर (नास्तिक) हैं। हम अल्लाह तआला से आफियत (बचाव) का प्रश्न करते हैं।'' {''मजमूओ फतावा व मक़ालात मुतनौविआ, शैख इब्ने बाज़'' (28/257–258)}.

(अनुवाद : अताउर्रहमान ज़ियाउल्लाह)